इंदौर सिटी भास्कर 12-08-2020

डॉ. विभा चौरसिया और डॉ. आभा चौरसिया का ऑनलाइन गायन आज

सिटी रिपोर्टर | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर शहर की शास्त्रीय गायिकाएं डॉ. विभा चौरसिया और डॉ. आभा चौरसिया 12 अगस्त को शाम 7 बजे ऑनलाइन गायन प्रस्तुत करेंगी। वे भक्ति संगीत के इस कार्यक्रम में नर्मदापुरम कला जगत के फेसबुक पेज पर गायन प्रस्तुत करेंगी।

आभा व विभा ने गाई बंदिश 'घरवा नाहीं आए मोरे पिया'

बांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय संगीत संस्था मधुबंती संगीत कला केंद्र के ऑनलाइन कार्यक्रम में पहली बार शहर की दो गायिकाओं ने किया शास्त्रीय गायन

इंदौर • डीबी स्टार | यह पहला मौका है जब किसी अंतरराष्ट्रीय संस्था के ऑनलाइन कार्यक्रम में शहर की शास्त्रीय गायिकाओं डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया ने गायन किया। बांग्लादेश की मधुबंती संगीत कला केंद्र के कार्यक्रम में उन्होंने राग मारू बिहाग गाया। उनके गायन में रागदारी के साथ ही उपशास्त्रीय संगीत का रस और माधुर्य था। राग मारू बिहाग में उन्होंने विलंबित एकताल में पारंपरिक बंदिश प्रस्तुत की। बंदिश के बोल थे 'घरवा नाहीं आए मोरे पिया।' उन्होंने समन्वय करते हुए इस बंदिश में विरह को विरलता से अभिव्यक्त किया। इसी राग में इसी विरह भाव को और कुछ और सघन करते हुए द्रुत तीन ताल में बंदिश गाई 'कल नहीं आए निसदिन मोरी आली पिया बिन।' समापन उन्होंने कजरी से किया। इसमें उन्होंने 'रिमझिम-रिमझिम के बरसन लागी बदरिया' को सहजता और सरसता से प्रस्तुत किया।

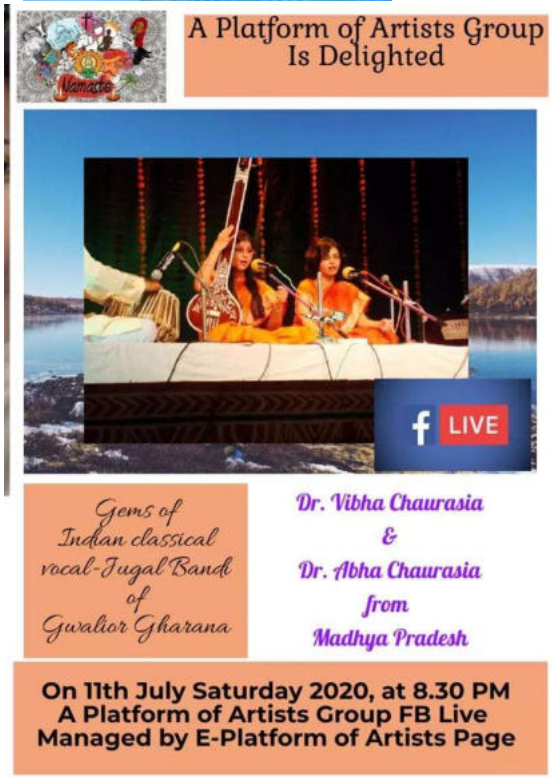

2020

डीबी स्टार इंदौर 14-07-2020

गुरुनानक, कबीर के भजनों की दी ऑनलाइन प्रस्तुति

शास्त्रीय गायन करतीं डॉ. आभा और विभा चौरसिया।

इंदौर • डीबी स्टार

ई-प्लेटफॉर्म ऑफ आर्टिस्ट ग्रुप ने ऑनलाइन शास्त्रीय गायन कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें शहर की दो शास्त्रीय गायिकाओं डॉ. आभा और विभा चौरसिया ने गायन किया। गायन की शुरुआत राग चंद्रकौंस से की। विलंबित तीन ताल में उन्होंने बंदिश गाई, जिसके बोल थे 'धन-धन भाग मोरे, आज सखी पिया घर आए।' फिर द्रुत तीन ताल में 'सजन आए द्वार हमारे' गाया। इन दोनों ही बंदिशों को रागदारी के साथ गाकर इसमें छिपे भावों को खूबी से अभिव्यक्त किया। समापन उन्होंने गुरुनानकजी के भजन 'साधो रचना राम बनाई' से किया। इस भजन से उन्होंने जता ... भी उनकी अ...

कबीर जनविकास समूह ने भी किया लोक गायन का आयोजन

कबीर जनविकास समूह ने लोक गायन का ऑनलाइन कार्यक्र... किया। इसमें युवा लोक गायिका गायत्री बुनकर को मौका दिया... यह उनका पहला लाइ... कार्यक्रम था। सतना क... इस गायिका ने कबी... के भजन 'झीनी-झीनी... रे चदरिया' को सरलत... से प्रस्तुत किया। उन्हों... हारमोनियम बजाते हु... 'रहना नहीं देश बिरान... है' भजन गाया। इसके बाद रंगमहल के दस दरवाजे, न जाने कौन... सी खिड़की खुली थी, सैंया निकल गए मैं ना लड़ी थी और मोरा हीर... ...बदले प... ...त की।

2021

Performance

वोकलिस्ट डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया ने ऑनलाइन कार्यक्रम में प्रस्तुति दी। हमने इन दोनों कलाकारों से साथ में गाने, चंडीगढ़ कनेक्शन के बारे में बात की।

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

अनलॉक के बाद कुछ कलाकार तो मंच पर प्रस्तुति दे चुके, लेकिन कुछ ने खुद ही सावधानी व बाकी बातों का ध्यान रखकर मंच पर जाने की बजाए ऑनलाइन प्रस्तुति देना बेहतर समझा। वोकलिस्ट डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया दोनों को मंच पर जाने का मौका मिला, लेकिन उन्हें अभी ऑनलाइन ही बेहतर लगा। वे दोनों बहनें इंदौर से हैं। हाल ही में दोनों ने वेब बैठक्स में प्रस्तुति दी। यह ऑनलाइन कार्यक्रम प्राचीन कला केन्द्र की ओर से हुआ। बैठक का 35वां एपिसोड था। कलाकारों के परिचय के बाद कार्यक्रम शुरू हुआ। जुड़वा बहनों की इस जोड़ी ने राग सुनाए और उसके बाद भजन सुनाया। इनका साथ हारमोनियम पर मोहन शुक्ला और तबले पर संजय मंडलोई ने दिया। हमने इन दोनों कलाकारों से प्रस्तुति, साथ में गाने, चंडीगढ़ कनेक्शन के बारे में बात की।

किन्हें सुनकर आप प्रेरित हुए? इस सवाल के जवाब में आभा बोलीं कि रेडियो पर अक्सर फिल्मी गाने सुनते थे। जब कोई क्लासिकल सॉन्ग सुनते तो मन करता कि हम इसी तरह से गाएं और साथ में गहराई में भी जाएं। पापा की दुकान में एक कलाकार आए तो उन्हें हमारे रूझान के बारे में पापा ने बताया और वहां से शुरू हुआ तालीम लेने का सिलसिला। तब हम दोनों 10 साल के थे। हमने गुरुजनों शशिकांत तांबे, डॉ. लीलावती, डॉ. सुवर्णा वाड, स्वर्गीय पं. बाला साहेब पुछवाले, कल्पना जोकरकर, पं. कमल कमले, डॉ. प्रभाकर गोहदकर से शिक्षा ली। अब सेमी क्लासिकल गुरु आदिती जी से सीख रहे हैं।

• सोचा नहीं था कि आगे चलकर साथ में ही गाएंगे...

आप दोनों ने साथ में गाना कब से शुरू किया? विभा बताती हैं कि हम दोनों ने साथ में सीखना शुरू किया। गुरुजन भी साथ में सिखाते और प्रस्तुति देने को कहते। तब लोगों ने बेहद सराहा। हमें साथ में गाना गाते हुए 25 साल हो गए। साथ में तालमेल बिठाना पड़ता है और चौकन्ना रहना पड़ता है। हम दोनों जुड़वा हैं, लेकिन बचपन में कभी इस बात को लेकर शरारत नहीं की। बचपन में तो हमारा लुक और ड्रेस एक जैसा ही होता था। अभी तो फिर भी हमने लुक बदल दिया है।

• दो बार आ चुके हैं चंडीगढ़...

चंडीगढ़ से जुड़ी पुरानी यादें बताते हुए विभा और आभा ने बताया कि हम दो बार चंडीगढ़ में प्रस्तुति देने आ चुके हैं। हर जगह की ऑडियंस अलग होती है। यहां की ऑडियंस काफी ध्यान से सुनती है। इन दिनों की बात करें तो अनलॉक होने के बाद हमें तीन बार मंच पर जाने का मौका मिला, लेकिन सोचा कि जहां इतने समय रुके हैं थोड़ा देर और सही क्योंकि खुद की सेफ्टी भी देखनी है। पिछले साल फरवरी के शुरुआत में ही मंच पर हम गए थे।

संगीत शख्सियत

शास्त्रीय संगीत में विस्मित जुगलबंदी स्वर-आभा विभा चौरसिया........

दैनिक भास्कर इंदौर सिटी भास्कर 27-02-2021

चौरसिया सिस्टर्स ने सुनाया राग कलावती, नानक के भजन

डॉ. विभा-डॉ. आभा चौरसिया ने राग कलावती गाया

सिटी रिपोर्टर . इंदौर

शहर की शास्त्रीय गायिकाओं डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया ने शुक्रवार को गायन किया। उन्होंने प्राचीन कला केंद्र की बैठक में हुए ऑनलाइन कार्यक्रम में राग कलावती की बंदिशें और नानक का भजन प्रस्तुत किया। उनके गायन में भाव को अभिव्यक्त करने का इत्मीनान भरा कलात्मक कौशल था तो माधुर्यभरी रससृष्टि पैदा करने की विनम्र कोशिश भी।

उन्होंने राग कलावती में बड़ा खयाल में बंदिश गाई जिसके बोल थे : म्हारे मन लागी थारी सूरतिया, मन बस गयो री अब। इस बंदिश को में उनका सुर-लगाव और घुमाव सुंदर था और इसके जरिए उन्होंने भाव को श्रोताओं के भाव-स्तर तक पहुंचाया। इसके बाद उन्होंने बदलते मौसम की मधुर आहट को सुनते हुए, तीन ताल में बंदिश चुनी जिसके बोल थे : बोलन लागी कोयलिया, भ्रमर बन भ्रमत, मधुमास आयो। उनके गायन की प्रसन्नता, उमंग और उल्लास में बसंत का अहसास खूबी से प्रकट हुआ। फिर द्रुत एकताल में दोनों ने तारो ना तारो थारी मरजी प्रस्तुत की। समापन उन्होंने नानक के भजन साधो रचना राम बनाई में भक्ति भाव को भावपूर्ण ढंग से संप्रेषित किया। गायिकाओं के साथ हारमोनियम पर मोहन शुक्ल और तबले पर संजय मंडलोई ने संगत की।

The Hitavada
Bhopal City Line | 2021-06-23 | Page- 4
ehitavada.com

Dr Abha, Dr Vibha Chaurasia perform during 'Shraddhanjali' cultural event

■ Staff Reporter

'SHRADDHANJALI', a five-day virtual cultural programme is being organised from June 19th to June 23rd by Swaranjali Delhi in association with Dhruv Bose Foundation in the memory of Shri Dhruv Bose. Dr Abha and Dr Vibha Chaurasia from Indore performed on June 21 on the occasion of World Music Day. They have perfromed in Raag Poorniya Kalyan, the composition in Madhya Laya Teentaal -"More Ghar Aa Jaa". Shubham Vyam accompanied on Tabla.

Shraddhanjali Festival was dedicated to all gurus, performers, artists, art critics and art lovers whom we lost due to corona. Artists from around the world will contribute in this festival along with a few video messages from our great maestros, gurus and others. COVID-19 has huge damage across the world in every respect of life. In the music industry too we have had a huge impact. Stalwarts like Pt Jasraj, SP Bala Subramaniam, Pt Rajan Mishra, Saroj Khan, Sajid Ali, Pt Debu Choudhry and many more passed away during corona period. Their contribution in the music, dance and fine arts will always be remembered.

"Human resource we lost can never be compensated in a lifetime period. Their talent will take another 50-60 years to be reborn that too if at all same talent takes a birth. Our heartfelt tribute to great souls of India who left us for their heavenly abode leaving us an inspirational path of life towards music as music is elixir of life.

While we are fighting with corona music is playing a great role in keeping our mental health stress free, stable, calm and motivated," said Pt Sitarist Subrata De, Founder of 'Swaranjali'.

Dr Abha and Dr Vibha Chaurasia

संगीत में एक-दूसरे की पूरक

सिर्फ अलर्टनेस और रिस्पेक्ट

राग मल्हार व राग भैरवी की बिखरी स्वर लहरियों के साथ हुआ समापन

2022

SPECIAL BHAJAN PROGRAMME AT THE HOLY ASHRAM

As a prelude to the Deepavali Celebration, special Bhajan Programme was organised at the holy Samadhi Shrine on 22 October 2022.

Twin sisters Dr. Abha Chaurasia and Dr. Vibha Chaurasia, renowned classical singers of Gwalior Gharana visited the holy abode of Sadgurudev Sri Swami Sivanandaji Maharaj on 22 October 2022 to offer their loving obeisance to the Holy Master and seek His blessings. During the night Satsanga, they presented beautiful Bhajans of Sant Kabir, Sant Tulsidas, Meera Bai and other saints. Their devout and mellifluous singing delighted the hearts of one and all present. The Satsanga concluded with felicitation of the twin sisters, Arati and distribution of Prasad.

May the abundant grace of the Lord Almighty and Sadgurudev be upon all.

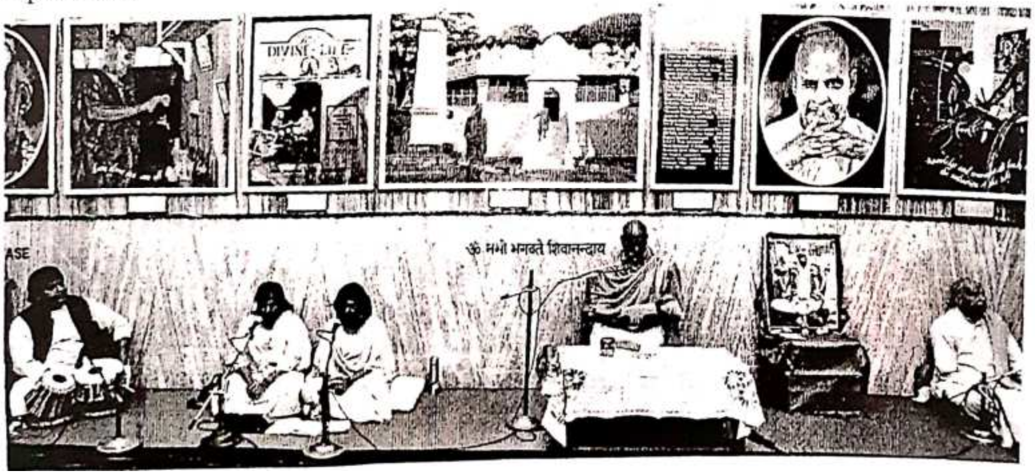

2023

മാതൃഭൂമി

പയ്യന്നൂരിൽ തുരീയം സംഗീതോത്സവത്തിന്റെ ഇരുപതാം ദിനം ഡോ. ആഭ ചൗരസ്യയും ഡോ. നിഭ ചൗരസ്യയും ഹിന്ദുസ്ഥാനി സംഗീതം അവതരിപ്പിക്കുന്നു. രത്നശ്രീ (തബല). രവീന്ദ്ര കട്ടോളി (ഹാർമോണിയം) എന്നിവർ സമീപം. തുരീയം സംഗീതോത്സവത്തിൽ തിങ്കളാഴ്ച ഡോ. കശ്യപ് മഹേഷ് പാടും.

आयोजन — जी-20 में भारत की अध्यक्षता के अवसर पर व्याख्यान, भाषण एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित

विदेशी छात्रों को भारतीय संस्कृति से कराया अवगत

विक्रम विवि में किया सांस्कृतिक कार्यक्रम सुर सरिता का आयोजन

[illegible]

श्रीगोपालजी महाराज का 25 वां पाटोत्सव

गोपाल निकुंज सेवा संस्थान में अष्ट दिवसीय 25 वां पटोत्सव मनाते हुए।

संवाददाता,

मयूर प्रभात वृन्दावन। राधा निवास- गोविंद कुंड क्षेत्र स्थित श्रीगोपाल निकुंज सेवा संस्थान में ठाकुर श्रीगोपालजी महाराज का पाटोत्सव एवं निकुंजवासी संत शिरोमणि ब्रजकिशोरी शरण (माताजी) का अष्ट दिवसीय 25 वां वार्षिक निकुंज प्रवेशोत्सव (रजत महोत्सव) अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। महोत्सव के अंतर्गत ब्रज चौरासी कोस यात्रा (वाहनों द्वारा), दैनिक रासलीला, संत-विद्वत संगोष्ठी, शास्त्रीय संगीत सभा एवं भजन संध्या आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसके अलावा संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा भी हुआ।

संत-विद्वत संगोष्ठी में की अध्यक्षता करते हुए राजाराम मिश्र (गुरु) एवं पूर्व प्राचार्य डॉ. रामसुदर्शन मिश्र ने कहा कि संत प्रवर ब्रजकिशोरी शरण (माताजी) एक ऐसी संत थीं, जो संत सेवा, गौ सेवा एवं निर्धन-निराश्रितों की सेवा को ही नारायण सेवा माना करती थीं। उनके द्वारा स्थापित किए गए सेवा प्रकल्प श्री गोपाल निकुंज सेवा संस्थान में पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ आज भी चलाए जा रहे हैं।

गोपाल निकुंज सेवा संस्थान के संस्थापकाध्यक्ष आचार्य युगल किशोर कटारे व भागवताचार्य चैतन्य किशोर कटारे ने कहा कि हमारी सदगुरुदेव ब्रजकिशोरी शरण (माताजी) परम् भजनानंदी एवं दिव्य तपोमूर्ति थीं। उन्होंने श्रीधाम वृन्दावन में साधनामय जीवन जीते हुए योग व तप की शक्ति से अनेकों व्यक्तियों की पीड़ा दूर की श्रीधाम वृन्दावन में रहते हुए श्रीकृष्ण भक्ति की लहर को समूचे विश्व में प्रवाहित कर के अनेकों व्यक्तियों का कल्याण किया।

ब्रजभूमि कल्याण परिषद के अध्यक्ष पंडित बिहारीलाल वशिष्ठ व पंडित रामगोपाल शास्त्री ने कहा कि ब्रजकिशोरी शरण (माताजी) अनेकानेक सद्गुणों की खान थी। यदि हम लोग उनके किसी एक गुण को भी अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारा कल्याण हो सकता है।

तत्पश्चात आयोजित शास्त्रीय संगीत सभा में शास्त्रीय गायक डॉ. आभा चौरसिया व डॉ. विभा चौरसिया (इंदौर) ने महावाणी के पदों का सुमधुर गायन कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। इसके अलावा संगीताचार्य पंडित देवकीनंदन शर्मा व स्वामी मनमोहन शर्मा आदि के ब्रज होली व बसंत सम्बन्धी रसियायों व भजनों को संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य श्रवण कर सभी श्रोता अभिभूत हुए।

महावाणी के पदों का सुमधुर गायन

वृन्दावन (छोटी सी बात)। श्रीगोपाल निकुंज सेवा संस्थान में ठाकुर श्रीगोपालजी महाराज का पाटोत्सव एवं निकुंजवासी संत शिरोमणि ब्रजकिशोरी शरण का अष्ट दिवसीय 25 वां वार्षिक निकुंज प्रवेशोत्सव सम्पन्न हुआ। महोत्सव के अंतर्गत ब्रज चौरासी कोस यात्रा (वाहनों द्वारा), दैनिक रासलीला, संत-विद्वत संगोष्ठी, शास्त्रीय संगीत सभा एवं भजन संध्या आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इसके अलावा संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा भी हुआ। वक्ताओं ने कहा कि संत प्रवर ब्रजकिशोरी शरण (माताजी) एक ऐसी संत थीं, जो संत सेवा, गौ सेवा एवं निर्धन-निराश्रितों की सेवा को ही नारायण सेवा माना करती थीं। उनके द्वारा स्थापित किए गए सेवा प्रकल्प श्री गोपाल निकुंज सेवा संस्थान में पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ आज भी चलाए जा रहे हैं। शास्त्रीय संगीत सभा में शास्त्रीय गायक डॉ. आभा चौरसिया व डॉ. विभा चौरसिया (इंदौर) ने महावाणी के पदों का सुमधुर गायन कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। संगीताचार्य पंडित देवकीनंदन शर्मा व स्वामी मनमोहन शर्मा आदि के ब्रज होली व बसंत सम्बन्धी रसियायों व भजनों को संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य श्रवण कर सभी श्रोता अभिभूत हुए।

2024

മലയാള മനോരമ

തുരീയം വേദിയെ ധന്യമാക്കി ചൗരസ്യ സഹോദരിമാർ

ഹൃദയ സംഗീതം

തുരീയം സംഗീതോത്സവം 20ാം ദിവസം ഡോ.ആഭ ചൗരസ്യയും ഡോ.വിഭ ചൗരസ്യയും ഹിന്ദുസ്ഥാനി സംഗീതം അവതരിപ്പിക്കുന്നു.

പയ്യന്നൂർ ● ശബ്ദ മാധുര്യം കൊണ്ട് ആസ്വാദകരെ ഒപ്പംചേർത്ത് ഡോ.ആഭ ചൗരസ്യ – ഡോ.വിഭ ചൗരസ്യ സഹോദരിമാർ തുരീയം സംഗീതോത്സവം 20ാം ദിവസം ധന്യമാക്കി.

തുരീയം വേദിയിൽ ആദ്യമായെത്തിയ ഈ സഹോദരിമാർ ഹിന്ദുസ്ഥാനി സംഗീതം അവതരിപ്പിച്ചു.

ഹരി മോഹനന്റെ ശിവപാലതാളത്തിന് ശേഷമാണ് ഡോ.ആഭയും ഡോ.വിഭയും ഹിന്ദുസ്ഥാനി സംഗീതം അവതരിപ്പിച്ചത്.

ഹാർമോണിയവുമായി രവീന്ദ്ര കട്ടോട്ടിയും തബലയുമായി രത്നശ്രീയും പിന്നണിയിലുണ്ടായിരുന്നു.

ഹരിമോഹനന്റെ ശിവപാല താളത്തിന് കാഞ്ഞങ്ങാട് രാജഗോപാലൻ (പുല്ലാങ്കുഴൽ), കലാമണ്ഡലം സതീശൻ (ചെണ്ട), കണ്ണൂർ സന്തോഷ് (മുഖർ ശംഖ്) എന്നിവർ പക്കമേളമൊരുക്കി.

പോത്താങ്കണ്ടം ആനന്ദ ഭവനം നടത്തിവരുന്ന തുരീയം സംഗീതോത്സവം 21–ാം ദിവസമായ ഇന്ന് 6ന് ഡോ. കശ്യപ് മഹേശ് കച്ചേരി അവതരിപ്പിക്കും.

നാളെ 6ന് സിക്കിൾ ഗുരുചരൺ കച്ചേരി അവതരിപ്പിക്കും.

City भास्कर
इंदौर • सोमवार 11 मार्च 2024

शास्त्रीय सांझ | पं. बिस्वजीत राय चौधरी का सरोद वादन चौरसिया बहनों का गायन

अमूमन राग हिंडोल बहार सरोद पर नहीं बजाते, लेकिन इंदौर में क्या खूब बजा...

सिटी रिपोर्टर |

फोटो : संदीप जैन

उस्ताद अमजद अली खां साहब के शागिर्द पं. बिस्वजीत राय चौधरी जब मंच पर आए तो सुनने वालों को उम्मीद थी ही कि आज कुछ बेहतरीन सुनने को मिलेगा। चौधरी के सरोद ने वह कमाल किया भी।

यह जिक्र है रविवार की शाम पंचम निषाद संगीत संस्थान, चंडीगढ़ के प्राचीन कला केन्द्र की ओर से प्रेस क्लब सभागार में आयोजित 'बसंत तरंग' का। बिस्वजीत राय ने शुरुआत एक कठिन राग छायानट से की। आलाप जोड़ और झाला के बाद इस राग में कुछ बंदिशें बजाईं। छायानट के बाद उन्होंने एक और मुश्किल राग चुना हिंडोल बहार। बसंत ऋतु के इस राग को आमतौर पर सरोद पर नहीं बजाया जाता लेकिन यहां बजा और बहुत खूब बजा। उनकी साज पर पकड़, गहरे रियाज और बजाने के कौशल ने सरोद के स्वरों को ऐसा अप्रतिम रूप दिया कि सुनने वालों के मन भी झंकृत हो गए। यहां हितेन्द्र दीक्षित ने तबले पर संगत की।

इससे पूर्व शहर की शास्त्रीय गायिकाओं की जोड़ी आभा और विभा चौरसिया का गायन हुआ। इन्होंने शुरुआत राग पूरिया कल्याण से की। विलंबित बंदिश थी होवन लागी सांझ अब तो चेतो मनवा...। छोटे खयाल की बंदिश थी मोरे घर आजा सुरजन सैयां मीत पियरवा...। रियाज से सधे हुए स्वर व आपसी तालमेल ने चौरसिया बहनों का गायन सुनने वालों को तृप्त किया। इन्होंने गायन का अंत एक होरी से किया, उड़त अबीर गुलाल लाली छाई...लाल भयो अंबर लाल भयी जमना लाल भए गौरी गोपाल...। इनके साथ तबले पर देवाशीष अधिकारी और हारमोनियम पर मोहन शुक्ल थे।

शुरुआत संस्थान के छात्र युवा गायक केदार मोडक ने राग श्री से की। विलंबित से लेकर द्रुत तक उनके गायन ने बता दिया कि उनमें भविष्य में बड़ा कलाकार बनने का धैर्य और प्रतिभा है। स्वागत शोभा चौधरी, अरविंद तिवारी ने किया।

रागों की पिचकारी, बंदिशों की बौछार, श्रोताओं के दिलों में वसंत बहार

श्रोताओं के मन को रंगने का यह कार्य कलाकारों ने रागों की पिचकारी और बंदिशों की बौछार से किया। यह नजारा था प्रेस क्लब स्थित सभागृह का जहां रविवार शाम बसंत तरंग कार्यक्रम हुआ। प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़, पंचम निषाद संगीत संस्थान इंदौर और इंदौर प्रेस क्लब के समन्वय से यह कार्यक्रम हुआ।

तीन चरणों में बंटे कार्यक्रम का अंतिम पड़ाव चंद श्रोताओं के बावजूद भारी साबित हुआ। इसकी वजह थी इस पड़ाव में पं. बिस्वजीत राय चौधरी का प्रस्तुति देना। सरोद के तार छेड़ते हुए कलाकार ने न जाने कब श्राताओं के दिलों के तार छेड़ दिए पता ही नहीं चला। अपने वादन का आरंभ उन्होंने राग छाया नट से किया। आलापचारी के बाद कुछ पारंपरिक बंदिशें प्रस्तुत की। इस दौरान तबले ने तो मौन ही साथ रखा था लेकिन यह मौन खल नहीं रहा था बल्कि और भी आनंदित कर रहा था क्योंकि सरोद के तारों की हरेक तान साफ सुनाई दे रही थी और मधुर इतनी थी कि यदि महफिल बगैर संगतकार के भी चलती तो अधूरी नहीं लगती। अमजदअली खां से ली गई कलाकार की 40 वर्ष की तालीम और प. मल्लिकार्जुन मंसूर के साथ बिताए वर्षों के अनुभव का निचोड़ मानों कलाकार ने यहां पेश कर दिया। वसंत ऋतु को ध्यान में रखते हुए कलाकार ने राग हिंडोल बहार में निबद्ध रचनाएं पेश की। राग बहार और राग हिंडोल को मिलाकर तैयार किया गया यह राग बेशक मधुर है लेकिन कलाकार ने इसे जिस तरह से प्रस्तुत किया और रचनाओं से जुड़ी जो तकनीकी बातें बताई वह महफिल को सवाया ही कर रही थी। उन्होंने बताया कि जब वे पं. मल्लिकार्जुन के साथ रहते थे तब छायानट के बारे में एक दिन सोच रहे थे। तब पं. मल्लिकार्जुन ने इस राग में मध्यलय की 23 बंदिशें सुना दी। अपने वादन के दौरान पं. बिस्वजीत राय चौधरी ने तबले पर संगत कर रहे हितेंद्र दीक्षित को भी वादन का हुनर दिखाने का भरपूर मौका दिया।

वादन करते पं.बिस्वजीत राय चौधरी, तबले पर है हितेंद्र दीक्षित। ● सौ. आयोजक

सुरों की इस सभा का आगाज शहर के युवा कलाकार केदार मोडक ने किया। राग श्री में विलंबित एकताल में पारंपरिक रचना 'सांझ भई आवो रे हरि के गुन निज गावो' सुनाई। इसके बाद इसी राग में मध्यलय त्रिताल में पं. सीआर व्यास द्वारा रचित बंदिश 'सांझ की बेर सुमिर हरि नाम' सुनाई। ठहरावदार इन दोनों बंदिशों के बाद द्रुतलय को चुनते हुए एक वेग का अहसास कलाकार ने कराया और बंदिश 'काहे डर पाऊं मैं बरसे कृपा' बहुत ही उम्दा ढंग से पेश किया। तबले पर धवल परिहार ने, हारमोनियम पर सुयश राजपूत ने संगत की। इसके बाद डा. आभा और डा. विभा चौरसिया ने मंच संभाला। युगल प्रस्तुति लिए यह पड़ाव और भी मधुर था।

राग पूरिया कल्याण लिए इन गायिकाओं ने खयाल गायकी पेश की। बड़ा खयाल एक ताल में विलंबित लय में 'होवन लगी सांझ अब तो चेतो मनवा रे' तथा छोटा खयाल तीन ताल में निबद्ध रचना 'मोरे घर आजा' भी सुनाई। चूंकि फाल्गुन मास आधा बीत चुका है सो कलाकारों ने होरी को भी प्रस्तुति का हिस्सा बना लिया। अपने गायन का समापन इन्होंने होरी 'उड़त अबीर गुलाल लाली छाई' सुनाकर किया। इनके साथ तबले पर पं. देवाशीष अधिकारी और हारमोनियम पर मोहन शुक्ल ने संगत की। कार्यक्रम का संचालन उज्जवला जोशी ने किया।

2025

डा. आभा चौरसिया और डा. विभा चौरसिया

तब से जारी है जुगलबंदी

शास्त्रीय संगीत की दुनिया में डा. आभा और डा .विभा चौरसिया का नाम जाना-पहचाना है। इनकी जोड़ी 30 वर्ष से जुगलबंदी कर रही है। डा. विभा बताती हैं दोनों गुरु डा. शशिकांत तांबे से जब संगीत की शिक्षा लेने जाती थीं तो उन्होंने कहा था तुम दोनों साथ में गाया करो। गुरु की आज्ञा कहें या संजोग कि दोनों ने अभ्यास के साथ मंचीय प्रस्तुति साथ में देना शुरू किया और जुगलबंदी के लिए हम बहनें प्रसिद्ध हो गईं। एक का गला नासाज होता है तो दूसरी सभा संभाल लेती है।

इंदौर, गुरुवार, 10 अप्रैल, 2025
नईदुनिया सिटी
इंदौर

इसलिए सरनेम नहीं लगाती हैं काजोल

नईदुनिया | 9
इंदौर, गुरुवार, 09 जनवरी, 2025

सुर उस्ताद रजब अली खां-अमानत अली खां की स्मृति में संगीत समारोह शुरू

सर्द रात में बिखरा संगीत का माधुर्य...

प्रस्तुति देती डा. आभा और डा. विभा चौरसिया। • नईदुनिया

नईदुनिया प्रतिनिधि, देवास : सर्द हवा को लेकर आई सांझ सुरों में ढलकर रात में तब्दील हुई। रागों की मिठास से किया स्मरण मूर्धन्य संगीतज्ञों का... सुरीले आलापों से सजी बंदिशों की महक से सभागार में संगीत की महक बिखरी। ख्याल की खूबसूरती के साथ सरोद का सौंदर्य दिखा। सर्द रात में गर्माहट घोलते सुर देह से होकर रूह में समाए और सुरों की डगर पर लयबद्ध होकर प्रवाहमान हुआ सुरीला सफर...।

संगीत के सौंदर्य से सजी शाम का कुछ इस तरह का नजारा था बुधवार को मल्हार स्मृति मंदिर सभागार का। उस्ताद रजब अली खां-अमानत अली खां की स्मृति में दो दिवसीय संगीत समारोह की शुरुआत हुई। संस्कृति संचालनालय, भोपाल द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पहले दिन तीन प्रस्तुतियां हुईं। पहली प्रस्तुति के रूप में उज्जैन के शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने गायन की प्रस्तुति दी। सहायक व्याख्याता सुशीला वसुनिया के मार्गदर्शन में समर्थ शर्मा, प्रमोद गर्ग, आर्यन राव, हर्ष व्यास, इशिका पांचाल, वैष्णवी सेन, विधि जोशी एवं पूजा यादव ने प्रस्तुति दी। हारमोनियम पर अमन खान एवं तबले पर हर्ष दशलानिया ने संगत की। आखिरी प्रस्तुति संगीत की 15वीं पीढ़ी की प्रतिनिधित्व कर रहे विख्यात सरोद वादक पं. विकास महाराज मंच पर आए। उनके साथ प्रभाष महाराज तबले पर थे।

घरवा ना ही आए मोरे पिया...

इंदौर की डा. आभा चौरसिया, डा. विभा चौरसिया ने शुरुआत की राग मारु बिहाग से। विलंबित एक ताल में निबद्ध बंदिश घरवा ना ही आए मोरे पिया...से विरह व्यथा को सुरों में पिरोया तो मध्य लय तीन ताल में निबद्ध छोटा ख्याल कल ना ही आए...से पिया के मन को रिझाया। राग कलावती में झनक झनक झन बाजे पैजनिया...बंदिश सुनाई।

सुर उस्ताद रजब अली खां-अमानत अली खां की स्मृति में संगीत समारोह शुरू
सर्द रात में बिखरा संगीत का माधुर्य...

प्रस्तुति देती डा. आभा और डा. विभा चौरसिया। • नईदुनिया

श्रीनाथ के दरबार में चौरसिया बहनों ने शास्त्रीय गायन की दी सुमधुर प्रस्तुति

इंदौर » बलवास टाइम्स

साउथ तुकोगंज स्थित श्रीनाथ मन्दिर समाधि स्थान पर शास्त्रीय गायिका बहिने डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया ने भक्ति पदों की सुमधुर प्रस्तुति दी। संस्थान के सचिव संजय गो. नामजोशी ने बताया कि इस बार का आयोजन जन्माष्टमी पर केंद्रित था।

डॉ. आभा और डॉ. विभा ने शुरुआत की बड़ा ख्याल विलंबित एकताल में - होवन लागी सांझ ,,,,से। दोनों संगीत बहनों ने अपनी गायकी में शास्त्रीय - उप शास्त्रीय और सुगम संगीत तीनों विधाओ में सुंदर जुगलबंदी की। डॉ. आभा की गायकी में जहां सुरीलापन था वहीं डॉ. विभा की प्रस्तुति में ताल बध्य अनुशासन। हर प प्रस्तुति में सुर एकदम सही लग रहे थे, और सुनने वाले भी खूब आनंदित हो रहे थे। दोनों बहिनों ने जब पुरजोर कशिश से - आनंद नंद महल में छायो,,, गाया तो कुछ देर के लिए संपूर्ण वातावरण कृष्णमय हो गया। उसके बाद की प्रस्तुति - झनक झन बाजे,, राम की आयी बदरिया, चलो मन वृन्दावन की ओर ,,,को खूब सराहना मिली। समापन - ओ मिताई मैं तो श्याम की हू परछाई,,,, से हुआ। तबला पर संगत गांधार राजहंस ने दी। हारमोनियम पर संगत डॉ. रचना शर्मा ने और तानपुरा पर कु. अवनि चौरसिया ने दी। अतिथि स्वागत कांचन तारे दीप्ति ओक, सारिका रस्से, विनायक जोशी ने किया। संचालन किया डॉ. संदीप तारे ने। मीडिया प्रभारी प्रवीण जोशी ने बताया कि हर माह के दूसरे या तीसरे शनिवार की शाम को श्रीनाथ महाराज समाधि स्थान पर शास्त्रीय गायन का संगीतमय कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

नईदुनिया
सिटी

भजनों संग बही अध्यात्म की धारा

श्री सारदा मठ में शास्त्रीय संगीत और स्वामी विवेकानंद के प्रिय भजनों की हुई प्रस्तुति

2025

श्रीनाथ दरबार में चौरसिया बहनों ने दी शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति

सत्ता सुधार ■ इंदौर

साउथ तुकोगंज स्थित श्रीनाथ मन्दिर समाधि स्थान पर शास्त्रीय गायिका बहने डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया ने भक्ति पदों की सुमधुर प्रस्तुति दी। संस्थान के सचिव संजय गो. नामजोशी ने बताया कि इस बार का आयोजन जन्माष्टमी पर केंद्रित था।

डॉ. आभा और डॉ. विभा ने शुरुआत की बड़ा ख्याल विलंबित एकताल में, होवन लागी सांझ...से । दोनों संगीत बहनों ने अपनी गायकी में शास्त्रीय- उप शास्त्रीय और सुगम संगीत तीनों विधाओ में सुंदर जुगलबंदी की। डॉ. आभा की गायकी में जहां सुरीलापन था वही डॉ. विभा की प्रस्तुति में ताल बध्य अनुशासन। प्रस्तुति में सुर एकदम सही लग रहे थे, और सुनने वाले भी खूब आनंदित हो रहे थे। दोनों बहनों ने जब पुरजोर कशिश से- आनंद नंद महल में छायो... गाया तो कुछ देर के लिए संपूर्ण वातावरण कृष्णमय हो गया। उसके बाद की प्रस्तुति झनक झन बाजे... राम की आयी बदरिया, चलो मन वृन्दावन की ओर... को खूब सराहना मिली। समापन ओ मिताई मैं तो श्याम की हू परछाई... से हुआ। तबला पर संगत गांधार राजहंस ने दी। हारमोनियम पर संगत डॉ. रचना शर्मा ने और तानपुरा पर कु. अवनि चौरसिया ने दी। अतिथि स्वागत कांचन तारे दीप्ति ओक, सारिका रस्से, विनायक जोशी ने किया। संचालन किया डॉ. संदीप तारे ने। मीडिया प्रभारी प्रवीण जोशी ने बताया कि हर माह के दूसरे या तीसरे शनिवार की शाम को श्रीनाथ महाराज समाधि स्थान पर शास्त्रीय गायन का संगीतमय कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

'आनंद, नंद महल में छायो...'

इंदौर। साउथ तुकोगंज के श्रीनाथ मंदिर में डॉक्टर आभा और डॉ. विभा चौरासिया का शास्त्रीय गायन हुआ।

संस्थान के सचिव संजय गो.नामजोशी, मीडिया प्रभारी प्रवीण जोशी ने बताया कि 'होवन लागी सांझ...' से शुरुआत की। 'आनंद नंद महल में छायो...' और 'झनक झन बाजे...' भी सुनाया। 'मैं तो श्याम की हूं परछाई...' से महफिल अंजाम पर पहुंची। साज पर गांधार राजहंस, डॉ. रचना शर्मा और अवनि चौरासिया थी। स्वागत कंचन तारे ने किया। आभार डॉ. संदीप तारे ने माना।

शास्त्रीय गायिका बहिने डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया का मधुर गायन

इंदौर। साउथ तुकोगंज स्थित श्रीनाथ मन्दिर में 16 अगस्त की शाम को 7 . 30 बजे शास्त्रीय गायिका डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया का मधुर गायन होगा।

संस्थान के सचिव संजय गो. नामजोशी ने बताया कि डॉ.आभा और डॉ. विभा चौरसिया दोनों सगी बहने और दोनों ने शास्त्रीय और उप शास्त्रीय संगीत की शिक्षा एवं मार्गदर्शन वरिष्ठ कलाकार डॉ. शशिकांत तांबे, पं. बाला साहेब पुंछवाले और पं. कमल कांबले से प्राप्त किया है। दोनो युवा कलाकारों की संगीत प्रस्तुति इंदौर के अलावा दिल्ली, प्रयाग, जयपुर, कोटा, भुवनेश्वर, कोलकात्ता आदि स्थानों पर हो चुकी है।

चौरसिया बहनों ने क़ी शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति

इन्दौर (सिटी ब्लास्ट न.प्र.)। साउथ तुकोगंज स्थित श्रीनाथ मन्दिर समाधि स्थान पर शास्त्रीय गायिका बहिने डॉ. आभा और डॉ. विभा चौरसिया ने शास्त्रीय गायन भक्ति पदों की प्रस्तुति दी। संजय नामजोशी ने बताया कि संगत गांधार राजहंस, डॉ. रचना शर्मा, अवनि चौरसिया ने की। कांचन तारे दीप्ति ओक, सारिका रस्से, विनायक जोशी, डॉ. संदीप तारे, प्रवीण जोशी मौजूद थे।

4 नईदुनिया
देवास
www.naidunia.com

सर्द रात में बिखरा रागों का माधुर्य...'ख्याल' की खूबसूरती, 'सरोद' का सौंदर्य

उस्ताद रजब अली खां के स्मारक पर पेश की फूलों की चादर, बंदिशों से दी स्वरांजलि